بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 30.12.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा, महान स्तरीय बदरी सहाबी हज़रत हमज़ा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धन वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 30 दिसम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के वर्णन के अन्त में मैंने बताया था कि बदरी सहाबियों का वर्णन अब पूरा हुआ परन्तु कुछ सहाबी जिनका वर्णन पहले हुआ था उनके सम्बंध में कुछ बातें बाद में सामने आईं हैं, किसी अवसर पर वे बयान करूँगा अथवा जब इनको प्रकाशित किया जाएगा तो उसमें ये बातें आ जाएँगी। कुछ लोग लिख रहे हैं कि हमें इस इतिहास को सुन कर अत्यधिक लाभ हुआ है इस लिए मैंने उचित समझा कि यह भाग भी ख़ुत्बों में बयान हो जाए। इसके अंतर्गत पहला वर्णन हज़रत हमज़ा रज़ी. का है। आप रज़ी. आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा थे और आप स. को अत्यंत प्रिय थे, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हमज़ा नाम बहुत पसन्द था।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत हमज़ा रज़ी. की पतनियों तथा उनसे पैदा होने वाली संतान के संक्षिप्त वर्णन के बाद फ़रमाया कि हज़रत हमज़ा रज़ी. की क़बूल ए इस्लाम के सम्बंध में एक रिवायत है कि जब आप रज़ी. ने क्रोध की स्थिति में यह कह दिया कि हाँ, मैं मुहम्मद के दीन पर हूँ, तो आप कहते हैं कि मुझे शंका हुई कि मैंने अपने पूर्वजों के दीन का छोड़ दिया है, मैं रात भर सो न पाया। फिर मैं ख़ाना-ए-कअबा के पास आया और अल्लाह तआला के समक्ष रोया और गिड़गिड़ाया कि ऐ अल्लाह, मेरे सीने को हक़ के लिए खोल दे तथा सन्देहों और आशंकाओं को दूर कर दे। मैंने अभी दुआ पूरी भी नहीं की थी कि असत्य मुझसे दूर हो गया। उसके बाद मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा अपनी पूरी अवस्थ बयान की। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे विषय में हक़ पर जम जाने की दुआ की। एक रिवायत के अनुसार हज़रत हमज़ा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि मुझे हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनकी वास्तविक शकल के साथ दिखाएँ। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम उन्हें देखने में समर्थ नहीं हो। उनके अनुरोध पर आप स.

ने फ़रमाया कि अपनी जगह पर बैठ जाओ, कथनाकार कहते हैं कि फिर हज़रत हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ख़ाना ए कअबा की उस लकड़ी पर उतर आए जिस पर मुशरिक लोग परिक्रमा करते समय अपने कपड़े डाला करते थे। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपनी निगाह उठाओ। जब उन्होंने नज़र उठाई तो देखा कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के दोनों पाँव एक बहुमूल्य हरे रंग के ज़बुर्जद नामक पत्थर के समान हैं फिर हज़रत हमज़ा रज़ी. मूर्छित होकर गिर पड़े।

सिफ़र के महीने सन 2 हिजरी में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वद्दान नामक युद्ध के लिए महाजिरों का एक दल साथ लेकर निकले तो इस्लाम की पताका हज़रत हमज़ा रज़ी. के हाथ में थी। जमादिल अव्वल 2 हिजरी में फिर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का के क़ुरैश की ओर से कोई सूचना पाकर महाजिरों के लगभग डेढ़ सौ दो सौ लोगों के साथ लड़ाई के लिए निकले तो एक बार फिर इस्लाम का झंडा हज़रत हमज़ा रज़ी. के हाथ में था। बदर की लड़ाई में युद्ध के लिए ललकार के समय क़ुरैश की सेना में से उतबा अपने भाई शीबा और बेटे वलीद को साथ लेकर अपनी सैन्य पंक्ति से आगे बढ़ा तथा अरब की पुरानी प्रथा के अनुसार अकेले अकेले लड़ाई के लिए ललकारा। अन्सार उनके मुक़ाबले के लिए आगे बढ़े तो आँहूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें रोकते हुए हज़रत अली रज़ी, हज़रत हमज़ा रज़ी. तथा हज़रत उबैदा बिन मुत्तलिब रज़ी. को आगे बढ़ने का संकेत किया। ये तीनों आँहुज़ूर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अत्यंत निकटतम रिश्तेदार थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यही चाहते थे कि हर आशंका के समय आप स. के रिश्तेदार सबसे आगे बढ़ें। उबैदा बिन मुत्तलिब रज़ी. वलीद के मुक़ाबले पर, जबकि हमज़ा रज़ी. उतबा और अली रज़ी. शीबा के मुक़ाबले के लिए आगे बढ़े। हमज़ा रज़ी. और अली रज़ी. ने तो अपने अपने विरोधी को एक दो वार में ही धूल चटवा दी, परन्तु उबैदा तथा वलीद ने एक दूसरे को कुछ चोटें पहुंचाईं तथा अन्ततः दोनों एक दूसरे के हाथों घोर जख़्मी होकर गिरे जिस पर अली रज़ी. तथा हमज़ा रज़ी. ने वलीद का तो तुरन्त वध कर दिया और उबैदा रज़ी. को उठा कर अपने कैम्प में ले आए किन्तु उबैदा रज़ी. इस आघात से जीवित न बच सके तथा बदर के युद्ध से वापसी पर रास्ते में ही उनका देहान्त हो गया।

मदिरा को अवैध करने के आदेश से पहले हज़रत हमज़ा रज़ी. ने हज़रत अली रज़ी. की ऊँटनियों को नशे की हालत में अत्यंत निर्दयता के साथ मार दिया। जब हज़रत अली रज़ी. को इस बात का पता चला तो आप रज़ी. को अत्यधिक कष्ट हुआ और आप रज़ी. आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और पूरी घटना बयान की। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह पूरा विवरण सुन कर घटना स्थल पर तशरीफ़ लाए और नाराज़गी प्रकट की। हज़रत हमज़ा रज़ी. उस समय भी नशे की अवस्था में थे, अतः उन सबको देख कर कहने लगे कि तुम सब मेरे बाप दादा के सेवक हो। आँहुज़ूर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उलटे पैरों वापस लौट आए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि जब मदिरा सेवन को अवैध घोषित कर दिया गया तो फिर सहाबी रज़ी. मदिरा के निकट भी न गए, यह स्तर था उन सहाबियों का।

बनू क़ैनक़ाअ नामक युद्ध में भी हज़रत हमज़ा आगे आगे थे तथा इस लड़ाई में भी इस्लाम का झंडा हज़रत हमज़ा रज़ी. के हाथों में था। बनू क़ैनक़ाअ मदीने के यहूदियों में वह क़बीला था कि जिसने

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ होने वाला समझौता सबसे पहले तोड़ा। बदर की लड़ाई के बाद तो उन्होंने अत्यंत दुष्टता शुरु कर दी तथा राग द्वेष की भावना से सन्धि को तोड़ दिया। एक मुसलमान महिला बाज़ार में किसी यहूदी की दुकान पर ख़रीदारी के लिए गई तो कुछ ग़ुन्डे यहूदी लड़कों ने उसे अत्यंत अशलील तरीक़े पर छेड़ा। स्वयं दुकानदार की यह अशलील हरकत थी कि उस महिला के तहमंद के निचले कोने को उससे नज़र बचा कर किसी काँटे इत्यादि से उसकी पीठ के कपड़े के साथ टांक दिया। इस प्रकार जब वह महिला लौटने लगी तो नंगी हो गई। इस पर वे यहूदी ठट्टा लगा कर हंसने लगे। मुसलमान महिला ने लाज के कारण एक चींख़ मारी तथा सहायता मांगी। संयोगवश एक मुसलमान वहाँ मौजूद था, वह तुरन्त वहाँ पहुंचा तथा आपस की लड़ाई में यहूदी दुकानदार मारा गया। इस पर उस मुसलमान पर चारों ओर से तलवारें बरस पड़ीं तथा वह स्वाभिमानी मुसलमान वहीं ढेर हो गया। इस घटना से मुसलमानों तथा यहूदियों में एक अशांति की अवस्था पैदा हो गई। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस घटना की सूचना मिली तो आप स. ने बनू क़ैनक़ाअ के सरदारों को बुलाया और उनको सावधान किया कि यह तरीक़ा उचित नहीं, तुम बाज़ आ जाओ और ख़ुदा से डरो। इस पर बजाए इसके कि बनू क़ैनक़ाअ के मुख्या खेद प्रकट करते, उन्होंने अत्यंत अहंकारी उत्तर दिए तथा कहा कि बदर की विजय पर गर्व न करो, जब हमसे मुक़ाबला होगा तो पता चल जाएगा कि लड़ने वाले कैसे होते हैं। विवश होकर आप स. सहाबियों की एक सेना लेकर बनू क़ैनक़ाअ के क़िलों की ओर रवाना हुए। बनू क़नक़ाअ भी तुरन्त युद्ध के लिए तय्यार हो गए और अपने क़िले में बन्द होकर बैठ गए। मुसलमानों ने बनू क़ैनक़ाअ के क़िलों को घेर लिया, पन्द्रह दिन तक घेराओ क़ायम रहा, अंततः बनू क़नक़ाअ का पूरा ज़ोर टूट गया तो उन्होंने इस शर्त पर क़िलों के द्वार खोल दिए कि उनकी सम्पत्तियाँ मुसलमानों की हो जाएँगी किन्तु उनके प्राणों तथा परिजनों पर मुसलमानों का कोई अधिकार नहों होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। मूसा की शरीअत के अनुसार तो ये सब वध योग्य थे परन्तु एक तो यह इस क़ौम का पहला अपराध था और दूसरा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दयालु एवं कपालु स्वभाव के कारण अति घोर दंड की ओर जो एक अन्तिम काररवाई होती है, आरम्भिक अपराध के कारण तय्यार न हो सकता था। अतएव इस क़बीले का मदीने में ठहरना, आस्तीन में सांप पालने से कम नहीं था। अतः आप स. ने बनू क़नक़ाअ के लिए यही आदेश पारित फ़रमाया कि वे मदीने से चले जाएँ। यह उनके अपराध की तुलना में एक अत्यधिक कृपालु निर्णय था जिसमें अपनी सुरक्षा का पहलू भी सम्मुख था। बनू क़नक़ाअ बड़ी शांति के साथ शाम देश की ओर चले गए।

हज़रत हमज़ा रज़ी. ओहद की लड़ाई में शहीद हुए थे, इसकी सूचना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहले ही अल्लाह तआला ने एक सपने के द्वारा दे दी थी। अतः आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि आप स. एक मेंढे का पीछा कर रहे हैं और उसको हत्या करते हैं, इसी प्रकार देखा कि आप स. की तलवार का सिरा टूट गया है, इसका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह स्वप्न-फल बयान फ़रमाया कि मेंढे की हत्या करने का अभिप्रायः यह है कि मैं दुश्मन के सेनापति का वध कर दूँगा, जबकि तलवार का किनारा टूटने का अर्थ यह है कि इस युद्ध में मेरे परिवार का कोई अति निकटवर्ती

रिश्तेदार शहीद होगा। अतएव इस युद्ध में हज़रत हमज़ा रज़ी. को शहीद कर दिया गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलहा का जो मुशरिकों का झंडा वाहक था, वध कर दिया।

हज़रत हमज़ा रज़ी. की शहादत के बाद उनके शव को कुचला भी गया था, आप रज़ी. की शकल बिगाड़ी गई, नाक कान काटे गए, पेट को चीरा गया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप रज़ी. की यह स्थिति देखी तो आप स. को अति कष्ट हुआ। एक रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं कुरैश के तीस, जबकि एक अन्य रिवायत के अनुसार आप स. ने क़सम खाकर फ़रमाया कि उनके सत्तर आदमियों के शवो को कुचलूँगा, जिस पर यह आयत नाज़िल हुई- और यदि तुम दंड दो तो उतना ही दंड दो जितना तुम्हारे साथ अत्याचार किया गया था और यदि तुम धैर्य रखो तो निःसन्देह यह अच्छा है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि धैर्य रखेंगे और अपनी क़सम का बदला चुका दिया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. के हवाले से हज़रत हमज़ा के मृत शरीर पर रोना पीटना किए जाने और उससे मना फ़रमाने की घटना बयान की, अन्सार महिलाएँ जब आप स. के पास हमज़ा के लिए विलाप करती हुई आईं तो आप स. ने उनका धन्यवाद किया तथा साथ ही शव पर रोने धोने तथा विलाप करने से मना फ़रमा दिया।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि परसों नया साल भी इन्शाअल्लाह शुरु हो रहा है, दुआएँ करें अल्लाह तआला नए साल में बरकतें लेकर आए तथा उनकी बरकतों से हमें लाभान्वित करे। जमाअत के लिए भी हर एक दृष्टि से यह बरकत वाला हो। दुश्मन की समस्त योजनाओं को अल्लाह तआला धूल में मिला दे और दुनिया में फैली हुई जमाअतों को अल्लाह तआला पहले से बढ़ कर अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। इसी तरह दुनिया साधारणत्या, दुआ करें दुनिया के लिए, युद्धों से अल्लाह तआला उनको बचाए। परिस्थितियाँ भयानक स भयानक होती जा रही हैं और विनाश मुंह खोले खड़ा है, कुछ पता नहीं हर एक अपने हितों को चाहता है, अल्लाह तआला ही रहम फ़रमाए और अपने पीड़ित भाईयों के लिए भी बहुत दुआएँ करें कि अल्लाह तआला अगले साल में हर तरह के अत्याचार तथा हानि से जमाअत को सुरक्षित रखे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131